भांडाशाह जैन मंदिर को सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेन्सी–2015

बीकानेर, 30 जून। बीकानेर के पांच शताब्दी प्राचीन भांडाशाह जैन मंदिर को अमेरिका की ट्रिपएडवाजर कंपनी ने सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेन्सी–2015 अवार्ड से नवाजा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के इस सम्मान के साथ कंपनी की ओर से अपनी वेबसाइट में बीकानेर के जूनागढ़ व भांडाशाह जैन मंदिर की विस्तृत जानकारी अपलोड की है, इससे संसार के विभिन्न स्थानों पर प्रवास कर रहे देशी–विदेशी पर्यटक बीकानेर के वैभव के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

श्री चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास के अध्यक्ष निर्मल धारीवाल ने बताया कि बीकानेर में पांच शताब्दी प्राचीन भांडाशाह जैन मंदिर धार्मिक आस्था के साथ पर्यटन केन्द्र में रूप में निरन्तर ख्याति प्राप्त कर रहा है। जैन धर्म के पांचवें तीर्थंकर भगवान सुमति नाथ का यह मंदिर नींव में घी डालने के साथ वास्तु व शिल्पकला में भी अनुकरणीय है। मंदिर ने 500 वर्ष पूर्ण कर आठ दिवसीय भव्य धार्मिक व सांस्कृतिक अनुष्ठान आयोजित किए गए तथा डाक विभाग की ओर से विशेष आवरण जारी किया गया। मंदिर के वैभव को कायम रखने के लिए करीब 25 लाख की लागत से मंडप में स्वर्ण महनोत की चित्राकारी का कार्य करवाया जा रहा है। अब तक मंदिर के बाहरी हिस्से में मंडप की चित्राकारी के नवीनीकरण का कार्य प्राचीन शैली के अनुसार करवाया गया है। मंदिर के गर्भगृह में स्वर्ण चित्राकारी का कार्य किया जा रहा है। मंदिर के पांच शताब्दी पर एक स्मारिका साक्षी का भी प्रकाशन किया गया। स्मारिका में बीकानेर के मंदिरों सहित इतिहास, कला व संस्कृति के आलेख प्रकाशित किए गए हैं। बीकानेर नगर में सबसे विशाल, सर्वोच्च शिखर वाले भव्य एवं कलात्मक तीन मंजिले त्रौलोक्य दीपक प्रसाद सुमति नाथ जैन मंदिर के निर्माण करने वाले भांडाशाह के नाम से अधिक जाना जाता है। इस मंदिर के शिलालेख में बताया गया कि संवत् 1571 में, आसोज सुदी दूज, महाराजा लूणकरण सिंह के समय इस मंदिर का निर्माण करवाया गया। धारीवाल ने बताया कि मंदिर के परकोटे की सामने की तरफ से लम्बाई 170 फीट व पीछे की तरफ से 190 फीट है। सामने की तरफ से चौड़ाई 145 फीट तथा पीछे की तरफ से 110 फीट है। मूल मंदिर की लम्बाई 72 फीट, बाह्य मंडप 23 फीट, सामने से चौड़ाई 39 फीट व पीछे साढ़े बावन फीट है। समतल भूमि से शिखर की ऊंचाई 111 फीट व अंदर के फर्श से 81 फीट ऊंचा है इसके दीवारों की मोटाई 8 से 10 फीट है।

तीन मंजिल के इस मंदिर में मूल नायक सुमति नाथ, दूसरी मंजिल में जैन धर्म के 19वें तीर्थंकर मल्लीनाथ व उसके ऊपर की मंजिल में मंदिर स्थापित प्रतिमा के अति प्राचीन होने व उसके लक्षण चिन्ह धूमिल होने के कारण नजर नहीं आ रहा है। तीसरी मंजिल पर ही मंदिर का निर्माण करने वाले भांडाशाह की प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के अधिष्ठायक देव भैरव है। मंदिर चर्तुमुख जिनेश्वर प्रतिमाएं होने के कारण चार भागों में विभक्त है। प्रत्येक भाग में काउसग्ग्र मुद्रा में 6 तीर्थंकर, 2 यक्ष व चार नर्तकियां बनी हुई हैं। इसी प्रकार कुल 24 तीर्थंकर, 8 यक्ष व 16 पुतलिकाएं बनी हुई हैं। मंदिर में शिल्पकार ने भरत मुनि के नाट्य शास्त्रा से संबंधित वाद्य यंत्राधारी व नृत्यरत देवांगनाओं की मूर्तियों कों को उकेरने में अपने सजीव प्रयास किया।

नींव में घी डाला जाना– सेठ भांडाशाह घी का व्यापार करते थे। मंदिर का निर्माण करवा रहे सूत्राधार ने सेठ की परीक्षा के लिए नींव में घी डालने का प्रस्ताव रख दिया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर सेठजी ने हां करते हुए दूसरे दिन मंजदूरों के आने से पहले ही अपने कर्मचारियों से मंदिर की नींव में घी डलवाना शुरू कर दिया। सूत्राधार जब आया और उसने देखा कि वास्तव में सेठजी घी डलवा रहे हैं तो उसने तुरन्त उनके पैर पकड़कर माफी मांगी तथा अपनी ओर से ली जा रही परीक्षा की बात कहीं ।

आलेख– विकास हर्ष
सहायक निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क कार्यालय,बीकानेर